न्यूज़ पेपर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया

NEWSPAPERS ASSOCIATION OF INDIA

Volume XVII वर्ष 17 | No. 9 अंक: 9 | August-2012 अगस्त-2012 | Rs. 5/- per copy

श्री प्रणव मुखर्जी दुनिया के श्रेष्ठतम राष्ट्र-अध्यक्ष

❑ श्रीराम तिवारी

भारत के 13 वें महामहिम राष्ट्रपति चुने जाने से भारत में अधिकांश नर–नारी जो राजनीती से सरोकार रखते हैं, खुश हैं। मैं भी खुश हूँ। इससे पहले कि अपनी खुशी का राज खोलूं उन लोगों के प्रति आभार व्यक्त करना चाहूँगा जिन्होंने यह सुखद अवसर प्रदान किया।

सर्वप्रथम में भारतीय संविधान का आभारी हूँ जिसमें ऐसी व्यवस्था है कि सही आदमी सही जगह पर पहुँचने में जरुर कामयाब होता है।सही से मेरा अभिप्राय उस 'सही' से है जो भारत के बहुमत जन–समुदाय की आम समझ के दायरे में हो। हालाँकि इस 'सही' से मेरे वैयक्तिक' सही' का सामंजस्य नहीं बैठता। वास्तव में मेरा सही तो ये है कि कामरेड प्रकाश करात ,कामरेड वर्धन, कामरेड गुरुदास दासगुप्त,कामरेड सीताराम येचुरी ,कामरेड बुद्धदेव भटाचार्य में से या वामपंथ की अगली कतार में से कोई इन्ही कामरेडों के सदृश्य अनुभवी व्यक्ति राष्ट्रध्यक्ष चुना जाता। लेकिन ये भारत की जनता को अभी इस पूंजीवादी बाजारीकरण के दौर में कदापि मंजूर नहीं। भारत की जनता को ये भी मंजूर नहीं कि घोर दक्षिण पंथी –साम्प्रदायिक व्यक्ति या उनके द्वारा समर्थित' हलकट' व्यक्ति भारत के संवैधानिक सत्तार्प्मुख की जगह ले। भारत की जनता को जो मंजूर होता है वही इस देश में होता है। भले ही वो मुझे रुचकर लगे या न लगे।भले ही वो उन लाखों स्वनामधन्य हिंदुवादियों,राष्ट्रवादियों और सामंतवादियों को भी रुचिकर न लगे। ये हकीकत है कि इस देश की जनता का बहुमत जिन्हें चाहता है उन्हें सत्ता में पदस्थ कर देता है।यह भारतीय संविधान के महानतम निर्माताओं और स्वतंत्रता के महायज्ञं में शहीद हुए 'धर्मनिरपेक्ष–समाजवादी–प्रजातांत्रिक' विचारों के प्रणेताओं की महती अनुकम्पा का परिणाम है। में इन सबका आभारी हौं।

में आभारी हूँ उन लोगों का जिन्होंने यूपीए ,एनडीए ,वाम मोर्चा और तीसरे मोर्चे के दायरे से बाहर आकर राष्ट्र हित में श्री प्रणव मुखर्जी को भारत का 'राष्ट्रपति चुनने में अपना अमूल्य वोट दिया। में आभारी हूँ भाजपा के उन महानुभावों का जिन्होंने 'नरेंद्र मोदी' को एनडीए का भावी नेता और भारत का प्रधान मंत्री बनाए जाने का प्रोपेगंडा चलाया,जिसकी वजह से एनडीए के खास पार्टनर धर्मनिरपेक्ष, जदयू को खुलकर श्री मुखर्जी के पक्ष में आना पडा।में आभारी हूँ शिवानन्द तिवारी जी ,नीतीशजी ,बाल ठाकरेजी,मुलायम जी,वृंदा करात जी,प्रकाश करातजी,सीताराम येचुरीजी,विमान वसुजी,बुद्धदेव भट्टाचार्य जी,मायावती जी,येदुराप्पजी और ज्ञात–अज्ञात उन सभी राजनीतिक दलों,व्यक्तियों ,मीडिया कर्मियों और नीति निर्माण की शक्तियों का जिन्होंने कांग्रेस को,श्रीमती सोनिया गाँधी को प्रेरित किया कि देश के 13 वें राष्ट्रपति के चुनाव हेतु प्रणव मुखर्जी को उम्मीदवार घोषित करें ताकि 'सकारण' किसी अन्य 'गैर जिम्मेदार ' व्यक्ति को इस पद पर आने से रोका जा सके।

में आभारी हूँ सर्वश्री अन्ना हजारेजी,केजरीवाल जी,रामदेवजी ,सुब्रमन्यम स्वामी जी,रामजेठमलानी जी नवीन पटनायक जी,जय लालिथाजी,जिहोने एनडीए के साथ मिलकर एक बेहद कमजोर और लिजलिजे व्यक्ति को उम्मेदवार बनाया ताकि 'नाम' का विरोध जाहिर हो जाए और 'पसंद' का व्यक्ति याने 'प्रणव दा ' ही महामहिम चुने जाएँ। संगमा को जब लगा कि ईसाई होने में फायदा है तो ईसाई हो गए।जब लगा की कांग्रेसी होने में फायदा है तो कांग्रेसी हो गए।जब लगा कि राकपा में फायदा है तो उसके साथ हो लिए।

जब लगा कि एनडीए के साथ फायदा है तो उनके साथ हो लिए इतना ही नहीं जिस आदिवासी समाज को वे पीढ़ियों पहले छोड़ चुके थे क्योंकि तब आदिवासी होने में शर्म आती थी।अब आदिवासी होने के फायदे दिखे तो पुनह आदिवासी हो लिए। उनकी इस बन्दर कूदनी कसरत ने इस सर्वोच्च पद के चुनाव में विपक्ष की भूमिका अदा की सो वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।देश उनका आभारी है।

विगत 19 जुलाई को संपन्न राष्ट्रपति के चुनाव में श्री प्रणव मुखर्जी की भारी मतों से जीत– वास्तव में उन लोगों की करारी हार है जो उत्तरदायित्व विहीनता से आक्रान्त हैं।अन्ना हजारे,केजरीवाल ,रामदेव का मंतव्य सही हो सकता है लेकिन अपने पवित्र?, साध्य के निमित्त साधनों की शुचिता को वे नहीं पकड सके और अपनी अधकचरी जानकारियों तथा सीमित विश्लेशनात्मकता के कारण सत्ता पक्ष से अनावश्यक रार ठाणे बैठे हैं।उन्हें बहुत बड़ी गलत फहमी है कि देश की भाजपा और संघ परिवार तो हरिश्चंद्र है केवल कांग्रेसी और सोनिया गाँधी ,दिग्विजय सिंह तथा राहुल गाँधी ही नहीं चाहते कि देश में ईमानदारी से शाशन प्रशाशन चले। इन्ही कूप –मंदूक्ताओं के कारण ये सिरफिरे लोग प्रणव मुखर्जी जैसे सर्वप्रिय राजनीतिग्य को भी लगातार जलील करते रहे।श्री राम जेठमलानी और केजरीवाल को तो चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए। उन्होंने मुखर्जी पर जो बेबुनियाद आरोप लगाये हैं उससे भारत की और भारत के सर्वोच्च संवैधानिक पद की गरिमा को भारी ठेस पहुंची है।

श्री प्रणव मुखर्जी की जीत न तो अप्रत्याशित है और न ही इस जीत से कोई चमत्कार हुआ है, पी ऐ संगमा भले ही अपने आपको कभी दलित ,कभी ईसाई,कभी अल्पसंख्यक और कभी आदिवासी बताकर बार–बार ये सन्देश

शेष पृष्ठ 2 पर...

और अब काका भी नहीं रहे...

❑ अब्दुल हई

सुचित्रा मित्रा, पंडित भीमसेन जोशी, शम्मी कपूर, जगजीत सिंह, भूपेन हजारिका, देव आनंद, शहरयार, मेहदी हसन, दारा सिंह और अब काका ने भी हमें अलविदा कह दिया। मुझे ऐसे समय में एक दोस्त का भेजा हुआ जोक याद आ रहा है जो केवल एक जोक न होकर आज की स्थिति पर अच्छा व्यंग है, "हे भगवान फिल्म इंडस्ट्री तथा शास्त्रीय संगीत में हम आपकी अत्यधिक अभिरुचि की सराहना करते हैं लेकिन क्या ही अच्छा हो अगर आपकी कृपा देश के नेताओं पर भी हो जाए जिन्होने घोटालों और अपने कर्मों से देश को बर्बाद कर रखा है"। कहने को तो यह एक व्यंग था लेकिन सच मे यह सोचने वाली बात है की एक के बाद एक बड़ी शखसियत हम से जुदा होती जा रही है। राजेश खन्ना (मृत्यु 18 जुलाई 2012) की मौत पर उनका ही कहा हुआ यह वाक्य मुझे याद आ रहा है, "बाबू मुशाय! जिंदगी और मौत ऊपर वाले के हाथ है, जहाँ पनाह ! जिसे न आप बदल सकते हैं न मैं, हम सब रंग मंच की कठपुतलियाँ हैं जिनकी डोर उस ऊपर वाले के हाथ में है। कौन कब कैसे उठेगा, यह कोई नहीं जनता"। राजेश खन्ना ने फिल्म आनंद में जब यह संवाद बोला था तो वो भी नहीं जानते थे कि उन्हें कैसी मौत नसीब होगी। उन्हें भी नहीं पता था कि जिंदगी के आखिरी मोड़ पर कितना अंधेरा है। राजेश खन्ना ने लगातार 15 हिट फिल्में देने का रेकॉर्ड बनाया था और उन्हें हिन्दी फिल्मों का पहला सुपरस्टार भी कहा जाता है। राजेश खन्ना (काका) बॉलीवुड का वो हीरो रहा है जिसने हिन्दी सिनेमा पर अपनी फिल्मों के द्वारा अपनी एक अलग पहचान बनाई और लगभग दो दशक तक हिन्दी सिनेमा पर राज करते रहे। कहा जाता है कि लड़कियाँ उन्हें खून से खत लिखा करती थीं और उन्हें देखने के लिए उनके बंगले के बाहर सैंकड़ों लोग हर दिन खड़े रहते थे।

राजेश खन्ना का असल नाम जतिन अरोरा था। उनका जन्म 29 दिसम्बर 1942 को अमृतसर में हुआ था। बचपन से ही उनकी रुचि एक्टिंग में थी, फिल्मों में आने से पहले वह थिएटर से जुड़े हुए थे और कई नाटकों में अपनी बेहतरीन अदाकारी का प्रदर्शन किया था। उन्होने सब से पहले 1966 में चेतन आनंद की फिल्म आखिरी खत में काम किया था, यह वो दौर था जब राज कपूर ,दिलीप कुमार और धर्मेंद्र का तूती बोलता था, उसी समय धर्मेंद्र की फिल्म फूल और पत्थर आई थी जिसके लिए उन्हें फिल्म फेयर अवार्ड भी मिला था। उनके साथ वाले अदाकारों में शशि कपूर और जितेंद्र का नाम लिया जाता है, राजेश खन्ना और जितेंद्र ने एक साथ ही एक्टिंग के गुर सीखे, शशि कपूर और राजेश खन्ना रोमांस के बादशाह कहे जाते थे। बहारों के सपने, डोली और इत्तेफाक राजेश खन्ना के आरंभिक दौर की फिल्में थीं, उसके बाद अराधना आई जिसने राजेश खन्ना को रातों रात स्टार बना दिया। यह फिल्म हॉलीवुड फिल्म टु ईच हीज ओन का रीमेक थी लेकिन

शेष पृष्ठ 2 पर...

How to prepare the mind for Pranayama

When the breath is steady or unsteady, so it is the mind, and with it the yogi. Hence, the breath should be controlled. (Hath Yog Praditaka)

❑ *Kalpana Karala*
[D.Y.N, N.D.D.Y, M.A (SOL, PRIKSHA MEDITATION YOG), PRANIC HEALER]

The life of a tree is said to have its roots below and it's branched above, so it is with man, for his nervous system has its roots in his brain. The spinal cord is the Trunk descending through the spiral column, while the nerves rundown from the brain into the spinal cord and branch off throughout the body.

The arteries, veins and nerves are channels for circulating and distributing energy throughout the body. The body is trained by practice of asanas, which keep the channels free from obstruction for the flow of the prana. Energy does not radiate throughout the body if the nadis are blocked with impunities. If nadis are disturbed, one's true nature and the essence of things cannot be discovered.

The practice of asanas strengthens the nervous system, and the practice of savasana soothes ruffled nervous. If the nerves collapse so does the mind. If the nerves are tense, so is the mind. Unless the mind is relaxed, silent and receptive, pranayama cannot be practiced.

For the practice of pranayam, there are two essentials, a stable spine and a still but alert mind. Bear in mind, however, that those who practice excessive backward bends may have an elastic spine, but it does not remain stable for long, other, who practice excessive forward stretches, may have a stable spine but not a still and alert mind. In backward bends, the lungs are stretched, whereas they do not expand in forward bends. The sadhaka has to strike a balance between the two, so that the spine remains stable and the mind stays alert and unwavering.

The practice of pranayama should not be mechanical. The brain and the mind should be kept alert, to correct and adjust the body position and the flow of breath. One cannot practice pranayam by force of

will complete receptivity of the mind and intellect are essential. In pranayama the relationship between chitta and breath is like that between a mother and her child. Chitta is mother and prana is the child. As a mother cherishes her child with love, care and sacrifice, chitta should be cherish prana. Pranayama will teach the sadhaka how to harness the energy of breath to provide vitality and vigor. By, pranayama with dedication, all disease are cured or controlled. Even, improper practice however give rise the problems of respiratory ailments like cough, asthma, pains in the head, eyes and ears.

Steadiness of mind and breath interact and makes the intellect steady too. Body becomes strong and the sadhaka is filled with courage. Mind is the lord of the sense organs, as the breath is of the mind. The sound of the breath is its lord and when that sound is maintained uniformly the nervous system quietness down. Then the breath flows smoothly, preparing the sadhaka for meditation.

Eyes plays an important role in practice of asanas the ears in pranayama. Being fully attentive and using one's eyes, one learns asanas and proper balance in the poses. However, pranayama cannot be performed in this way. During the practice of pranayama, eyes are kept closed and the mind concentrated on the sound of breathing, while the ears listen to the rhythm, the flow of the breath are regulated sloved and smoothened. While practicing asanas, the movement is from the known gross body to the unknown subtle one. In pranayama, the movement is from the subtle breath within to the gross body without. By continues practice of pranayama one's keep his/her mind free from impurities and fit for meditation.

प्रथम पृष्ठ का शेष...

श्री प्रणव मुखर्जी...

दे रहे थे कि 'अंतरात्मा की आवाज' पर लोग उन्हें ही वोट करेंगे और रायसीना हिल के राष्ट्रपति भवन की शोभा वही बढ़ाएंगे।उन्हें किसी सिरफिरे ने जचा दिया कि नीलम संजीव रेड्डी को जिस तरह वी।वी गिरी के सामने हारना पड़ा था उसी तरह संगमा के सामने मुखर्जी की हार संभव है।और लगे रहो मुन्ना भाई की तरह संगमा जी भाजपा के सर्किट भी नहीं बन सके।प्रणव दा के पक्ष में वोटों का गणित इतना साफ था कि प्रमुख विपक्षी दल भाजपा और उसके अलायन्स पार्टनर्स इसी उहापोह में थे कि काश कांग्रेस ने उनसे सीधे बात की होती।

प्रणव दा को कमजोर मानने वालों को आत्म–मंथन करना चाहिए कि वे वैचारिक धरातल के मतभेदों को एक ऐसे मोड़ पर खड़ा कर चुके हैं जहां से भविष्य की राजनीती के अश्वमेध का घोडा गुजरेगा। बेशक कांग्रेस ,सोनिया जी और राहुल को इस मोड़ पर स्पष्ट बढ़त हासिल है और ये सिलसिला अब थमने वाला नहीं क्योंकि प्रणव दादा के हाथों जब विरोधियों का भला होता आया है तो उनका भला क्यों नहीं होगा जिन्होंने उनमें आस्था प्रकट की और विश्वास जताया .अब यदि 2014 के लोक सभा चुनाव में गठबंधन की राजनीती के सूत्र 'दादा ' के हाथों में होंगे तो न केवल कांग्रेस न केवल राहुल बल्कि देश के उन तमाम लोगों को बेहतर प्रतिसाद मिलेगा जिन्हें भारतीय लोकतंत्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और श्री प्रणव मुखर्जी पर यकीन है।

अंत में अब में अपनी खुशी का राज भी बता दूँ कि मैंने जिस केन्द्रीय पी एंड टी विभाग में 38 साल सेवायें दी हैं प्रणव दा ने भी उसी विभाग में लिपिक की नौकरी की है।देश के मजदूर कर्मचारी और मेहनतकश लोग आशा करते हैं की उदारीकरण ,निजीकरण, और ठेकेकरण की मार से आम जनता की और देश की हिफाजत में महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी उनका उसी तरह सहयोग करेंगे जैसे की कोई बड़ा भाई अपने छोटे भाइयों की मदद करता है। श्री मुखर्जी का मूल्यांकन केवल राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अंतर–राष्ट्रीय स्तर पर किया जाना चाहिए। श्री मुखर्जी को चुना जाने पर न केवल कांग्रेस बल्कि विपक्ष को भी इसका श्रेय दिया जाना चाहिए। वे राष्ट्रीयकरण के पोषक हैं। श्री मुखर्जी ने वित्त मंत्री रहते हुए सार्वजनिक उपक्रमों का विनिवेश नहीं होने दिया इसलिये अमेरिकी–नीतियों के भी कोप–भाजन बनें। मजदूर–कर्मचारी हितों की रक्षा करने वाले ऐसे राष्ट्रपति से हमें काफी अपेक्षा रखते हैं।

और अब काका...

राजेश खन्ना और शर्मिला टागोर ने अपने बेमिसाल अभिनय से इश्क व मुहब्बत की नई तारीख लिखी जिसे दर्शकों ने बेहद पसंद किया और राजेश खन्ना लाखों दिलों की धड़कन बन गए। इसी फिल्म के लिए शर्मिला टैगोर को बेहतरीन अभिनेत्री का अवार्ड भी दिया गया। अराधना ही वो फिल्म थी जिस ने किशोर कुमार को उनके गाने रूप तेरा मस्ताना के लिए फिल्म फेयर अवार्ड दिया। 1969 में आई इस फिल्म के बाद तो जैसे किशोर राजेश खन्ना की आवाज ही बन कर रह गए और किशोर ने उनके लिए मेरे सपनों की रानी, यह जो मुहब्बत है, ओ मेरे दिल के चौन, जय जय शिव शंकर, कहीं दूर जब दिन ढल जाए, यह शाम मस्तानी, मैंने तेरे लिए, जिंदगी एक सफर, कोरा कागज था, मेरे दिल में आज क्या है, मेरे नैना सावन भादों, गोरे रंग पे न इतना और प्यार दीवाना होता है जैसे खूबसूरत, मधुर और सुपरहिट गाने गाए जो आज भी अपनी लोकप्रियता बरकरार रखे हुए हैं। यहाँ आर डी बर्मन अपने पंचम दा का नाम लेना आवश्यक है। किशोर कुमार, राजेश खन्ना और संगीतकार आर डी बर्मन की तिकड़ी ने हमें कटी पतंग, अमर प्रेम, अपना देश, आप की कसम, नमक हराम, अगर तुम न होते, हम दोनों और अलग अलग जैसी फिल्मों के मधुर संगीत दिये।

राजेश खन्ना ने कुल 163 फिल्मों में काम किया जिसमें 128 फिल्मों में वह हीरो के रूप में थे जबकि 17 शॉर्ट फिल्मों में भी काम किया। 106 फिल्में ऐसी थीं जिन्हें काका ने अपने दम पर हिट करवाया। उन्हें तीन बार सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए फिल्मफेयर अवार्ड दिया गया एवं 14 बार वो इस अवार्ड के लिए मनोनीत किए गए थे। उन्हें 2005 में फिल्मफेयर लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड भी दिया गया। 1969 से 1972 के दौरान राजेश खन्ना ने लगातार 15 हिट फिल्में दी जो आज भी हिन्दी सिनेमा की तारीख में एक रिकॉर्ड है। राजेश खन्ना यूँ तो अपनी रोमांटिक अदाकारी के लिए जाने जाते हैं लेकिन उन्होने ने कामेडी, सिरियस तथा बीमार लाचार इंसान का रोल भी किया था और किसी भी रोल में डूब कर उस किरदार को अमर कर दिया। शर्मिला टागोर और मुमताज के साथ उनकी जोड़ी को आज भी लोग याद करते हैं। 1975 के बाद राजेश खन्ना पर बुरा दौर आया और उनकी फिल्में कम कामयाब होने लगी, दर्द, धनवान और फिर वही रात उसी दौर की फिल्में हैं, यह फिल्में कारोबारी तौर पर हिट न हो सकीं लेकिन फिर भी राजेश खन्ना के काम को सराहा गया। 1980 के बाद राजेश खन्ना जैसे गुमनाम होकर रह गए । उन्होने डिम्पल कपाडिया से 1973 में शादी की थी, बाद में 1984 में डिम्पल से अलग हो गए और अकेले ही रहे। 1992 से 1996 तक वह कॉंग्रेस के टिकट से लोकसभा के मेम्बर भी रहे। उन्होने ने 2001–02 में टीवी सिरियल इत्तेफाक और अपने पराए में भी काम किया। दो दिलों के खेल में उनकी आखिरी फिल्म थी

राजेश खन्ना के गुमनाम हो जाने और तन्हा रह जाने के कई कारण हो सकते हैं, उन्हों ने 1973 में अपने से 15 वर्ष छोटी डिम्पल कपाडिया से शादी कर ली जबकि उस से पहले अंजु महेंद्रु के साथ उनके प्रेम प्रसंग का इंडस्ट्री में सब को पता था , किसी बात को लेकर वह अंजु से अलग हो गए और बाद में उन्होने अंजु के खिलाफ कई ऐसे काम किए जो उन्हें नहीं करने चाहिए थे। उन्हों ने अंजु की फिल्में रोकवादी, उनके विज्ञापन को रिलीज नहीं होने दिया। लोगों का मानना है की राजेश खन्ना की यह बड़ी भूल थी। डिम्पल से अलग होने के बाद राजेश जैसे टूट कर रह गए और तन्हाई में उन्हों ने शराब का सहारा लिया जिसने उनकी सेहत को तबाह कर दिया। इसके इलवा राजेश खन्ना ने 1975 के बाद कई बड़े प्रोजेक्ट को करने से इनकार भी कर दिया, यहाँ तक की उन्होने यश चोपड़ा की फिल्म के लिए भी ना कहा,कुछ ऐसी फिल्में भी उन्हों ने साइन की जो बुरी तरह फ्लॉप हुईं, रही सही कसर डिम्पल से अलग होने ने पूरी करदी, अलग होकर वो एकदम तन्हा हो गए और उनके पूरे परिवार ने उन्हें अकेला छोड़ दियाद्य कुछ बरसों के बाद अनीता आडवाणी सामने आईं और उन्होने राजेश खन्ना की तन्हाई दूर की। राजेश खन्ना की मौत से कुछ दिन पहले ही उनके दामाद अक्षय कुमार और उनकी बेटी साथ साथ दिखे थे और राजेश खन्ना ने यह कहा था कि वो अब ठीक हैं, लेकिन किसे पता था की हिन्दी सिनेमा का यह सुपरस्टार इतनी जल्दी हमें छोड़ कर चला जाएगा और हम अब उन्हें अपनी यादों में ही याद रखेंगे।जिंदगी का सफर है यह कैसा सफर कोई समझा नहीं कोई जाना नहीं...

बालासुन्दरम की कथा गाथा

दक्षिण अफ्रीका मे किए गए उनके सभी क्रिया कलापों को तभी समझ सकते हैं जब हम सामान्य जन के प्रति उनके प्रेम को समझ सकें। कालजीवी होकर ही कालजयी हुआ जा सकता है। महात्मा गांधी की विशेषता उनके कालजीवी होने में है। उनके विचार उनकी देशकाल के समीक्षा की देन है। यही कारण है कि आज परिस्थितियों की जटिलता ने गांधी को अत्यंत प्रासंगिक बना दिया है। उनका चिंतन, जिसमें साध्य के साथ–साथ साधन पर भी विचार किया जाता था, आज पुनः महत्त्वपूर्ण हो गया है।

गांधीजी के नेतृत्व में नेटाल के भारतीयों ने रंगभेदमूलक कानूनों तथा कष्टप्रद नियमों को रद्द कराने और भावी अत्याचार को रोकने की कोशिश की। गांधीजी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की लंदन स्थित ब्रिटिश समिति के सदस्यों से, जिनमें नौरोजी भी थे, सम्पर्क बनाए रखा। दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों के मामले को भारत मंत्री और उपनिवेश मंत्री के सामने पेश करने के विषय में, वह उनकी सलाह और समर्थन प्राप्त करते रहे। दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों की शिकायतों को लेकर उन्होंने एक अथक पत्राचारकर्ता के रूप में तीन महाद्वीपों में मित्रों, विरोधियों, समाचारपत्रों और अधिकारियों के नाम पत्र, तार और विवरण पत्रों की बौछार कर दी। गांधीजी के प्रचार कार्य के ही परिणाम स्वरूप भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने दिसम्बर 1894 के अपने वार्षिक अधिवेशन में मताधिकार विधेयक के विरोध में प्रस्ताव पास किया और लंदन के 'टाइम्स' समाचारपत्र ने इस समस्या पर कई विशेष लेख छापे।

कांग्रेस सदस्यता शुल्क की राशि 3 पौण्ड प्रति वर्ष थी। इसके कारण निम्न आय के भारतीयों को यह अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकी। हालाकि उपनिवेश में जन्मे हुए हिन्दुस्तानियों ने प्रवेश किया था और व्यापारियों का समाज उसमें दाखिल हुआ, लेकिन मजदूरों ने, गिरमिटिया समाज के लोगों ने, उसमें प्रवेश नहीं किया था। फलस्वरूप इसके ऊपर काफी रुतबे वाले गुजराती व्यापारियों का प्रभुत्व बना रहा। नतीजतन इसके क्रियाकलापों का झुकाव अपने ही समुदाय के लाभ की ओर रहा। कमजोर तबके के लोगों से जो दूरी पहले से बनी हुई थी, अब भी बनी रही। कांग्रेस उनकी नहीं हुई। वे उसमें चन्दा देकर और दाखिल होकर उसे अपना नहीं सके।

गांधी जी को इन अनुबन्धित मजदूरों के बारे में पता तो था, परन्तु उनके काम का दायरा कुछ ऐसा रहा कि अब तक उनसे उनका सीधा सम्पर्क नहीं हो पाया था। गांधी जी ने अब तक तो धनाढ्य व्यापारियों के साथ काम किया था, उनके हक की लड़ाई लड़ी थी, इसलिए श्रमिकों की समस्याओं की तुलना में, उन व्यापारियों की समस्याओं की उन्हें बेहतर जानकारी थी। मजदूरों और गिरमिटिया समाज के लोगों के मन में कांग्रेस के प्रति प्रेम तो तभी पैदा हो सकता था, जब कांग्रेस उनकी सेवा करती। ये तो समय बीतने के साथ ज्यों–ज्यों इक्का–दुक्का मामला सामने आया तो श्रमिकों और अन्य निम्न आय–वर्ग के लोगों की समस्यायें भी उनके सम्मुख आईं और वे उनसे वाकिफ हुए। तदनुसार धीरे–धीरे उनकी प्राथमिकताएं भी बदलने लगी। गरीबों और श्रमिकों की समस्यायों से गांधी जी का शुरु से ही नावाकिफ होने का कारण समझा जा सकता है। लेकिन यह कहना, जैसा कि कुछ मानते हैं, बिल्कुल ही गलत होगा कि गांधी जी का नटाल कांग्रेस में भारतीय बुद्धिजीवी व्यापारियों के एक किराए के प्रतिनिधि की तरह की हैसियत थी। उन्होंने अगर फीस लिया भी था, तो सिर्फ उन कामों के जो उन्होंने उनके लिए एक वकील के रूप में किए थे। उनकी राजनीतिक गतिविधियां ऐच्छिक थी, उनके समाज–सेवा का एक अंग।

इसी बीच घटनाचक्र ने एक नया मोड़ लिया। वकालत शुरु किए हुए उन्हें अभी दो–चार महीने ही हुए थे। अपने सक्रिय समय में से, वकालत के पेशे से कुछ समय बचाकर, गांधी जी गरीब और असहाय लोगों की मदद में लगाते थे। यदि उनकी कोई कानूनी सहायता भी करनी होती तो वे इसके लिए कोई फीस नहीं लेते थे। जरूरतमंदों की मदद करने की अपनी दिली इच्छा के तहत वे यह काम करते थे। गांधी जी कहते हैं,

"जैसी जिसकी भावना वैसा उसका फल, नियम को मैंने अपने बारे में अनेक बार घटित होते देखा है। जनता की अर्थात गरीबों की सेवा करने की मेरी प्रबल इच्छा ने गरीबों के साथ मेरा सम्बन्ध ा हमेशा ही अनायास जोड़ दिया है।"

एक दिन एक तमिल व्यक्ति रोता–कलपता हुआ उनके कार्यालय पहुंचा। उसके सिर पर साफा नहीं था, उसने साफा बगल में दबा रखा था, बैरिस्टर गांधी के प्रति सम्मान स्वरूप। उसके कपड़े फटे हुए थे, और वह लहू–लुहान था। मुंह से उसके खून बह रहे थे। समने के दो दांत बाहर आकर फटे ओठ से लटक रहे थे। दोनों हाथ को जोड़, वह भय से थर–थर कांप रहा था और उसकी आंख से झर–झर आंसू गिर रहे थे। उसने गांधी जी से कहा, कि उसे उसके मालिक ने बुरी तरह मारा है। गांधी जी का क्लर्क, जो खुद एक तमिल था, ने मध्यस्थ की भूमिका निभाई। उस व्यक्ति ने पूरी जानकारी विस्तार से गांधी को कहा।

उसका नाम बालासुन्दरम था। डरबन में रह रहे एक प्रतिष्ठित यूरोपीय परिवार के यहां वह एकरारनामे के तहत काम करने वाला एक मजदूर था। किसी कारण से नाराज हो कर उसके मालिक ने उसकी निर्दयता से पिटाई की थी। इस जंगली और क्रूर व्यवहार के कारण उसके दांत टूट गए थे। उसने गांधी जी के बारे में सुन रखा था। इसीलिए वह उनके पास मदद के लिए पहुंचा था।

गांधी जी ने तत्क्षण उस व्यक्ति को एक चिकित्सक के पास भेजा, ताकि वह एक चिकित्सा प्रमाण–पत्र ला सके जिसमें उसके जख्मों का पूरा व्यौरा हो। उन दिनों गोरे डॉक्टर ही मिलते थे, पर सौभाग्य से जिस डॉक्टर के पास वह गया, वह काफी संवेदनशील और पुण्यात्मा था। उसने चोटों का प्रमाण–पत्र दे दिया। इसके बाद गांधी जी बालासुन्दरम को एक मजिस्ट्रेट के पास ले गए। वहां पर बालासुन्दरम ने शपथ–पत्र प्रस्तुत किया। उसे पढ़कर मजिस्ट्रेट को काफी गुस्सा आया। बालासुन्दरम की हालत देख वह भी काफी द्रवित हुआ। बालासुन्दरम को उसने इलाज के लिए अस्पताल भेज दिया। साक्ष्य के तौर पर उसकी रक्तरंजित पगड़ी कोर्ट में ही रख ली गई। मालिक के नाम से समन भी जारी करने का हुक्म दिया गया।

अस्पताल से कुछ दिनों के बाद उसकी छुट्टी हुई। वह फिर गांधी जी के पास गया। उसकी इच्छा थी कि उसके मालिक के खिलाफ कार्रवाई हो। साथ ही उसने यह भी गुजारिश की कि उसका एकरारनामा रद्द किया जाए। गांधी जी की नीयत मालिक को सजा कराने की नहीं थी। वे तो बालासुन्दरम को उस आदमी से मुक्ति दिलाना चाहते थे। उन्होंने गिरमिटिया प्रथा से संबंधित कानूनों का अध्ययन किया। अनुबंधित मजदूरों पर लागू होने वाला कानून काफी कठोर था। करार या एग्रीमेंट पर आए हुए मजदूर पांच साल तक अपने मालिक को छोड़कर अन्यत्र नहीं जा सकते थे। काम छोड़ने को दंडनीय अपराध माना जाता था। साधारण नौकर अगर नौकरी छोडता तो मालिक उसके खिलाफ दीवानी मुकदमा तो दायर कर सकता था, फौजदारी नहीं। पर गिरमिटिया कानून में यही गुनाह फौजदारी गुनाह माना जाता था। कैद की सजा हो सकती थी। वास्तव में यह एक प्रकार की गुलामी की थी जिसमें और भी कई बातें जुड़ गईं थीं, जैसे कि मियाद। गुलाम की तरह गिरमिटिया मालिक की मिल्कियत माना जाता था। इसमें मजदूर को कर्म करने की स्वतंत्रता नहीं थी। हां, अगर मालिक रजामंदी से उसे अन्यत्र जाने दे, तो दूसरी बात थी।

गांधी जी कानून जानते थे। वे नहीं चाहते थे कि निर्दयी यूरोपीय मालिक को सजा मिले। कानून के तहत बालासुन्दरम की सहायता किस प्रकार से हो सकती थी इस पर गांधी जी ने खूब सोच विचार किया। दो ही तरीके थे। गिरमिटियों के लिए एक नियुक्त अधिकारी हुआ करता था, उसे रक्षक या आश्रयदाता (प्रोटेक्टर ऑफ इंडेन्चर्ड लेबरर्स) कहते थे। अगर वह गिरमिट या एकरारनामा रद्द कर देता या दूसरे के नाम कर देता तो बालासुन्दरम का पीछा उस मालिक से छूट सकता था। दूसरा उपाय यह था कि मालिक खुद ही उसे छोड़ने को तैयार हो जाता।

गांधी जी ने बालासुन्दरम से पूछा, "यदि तुम्हारा एकरारनामा किसी दूसरे मालिक के पास स्थानान्तरित कर दिया जाए तो क्या वह तुम्हें मान्य होगा?"

उसने हामी भरी।

इस मामले को आगे बढ़ाने के लिए गांधी जी को कई औपचारिक माध्यम से जाना पड़ा। गांधी जी मालिक से मिले और उससे बोले, "मैं आपको सजा नहीं कराना चाहता। इस आदमी को बहुत बुरी तरह से पिटाई लगी है, यह तो आप जानते ही हैं। आप इसका गिरमिट दूसरे के नाम कर दें, इसमें ही हमें संतोष होगा।"

पहले तो यूरोपीय मालिक इस बात के लिए तैयार हो गया था कि वह बालासुन्दरम को छोड़ देगा, पर पत्नी के द्वारा विरोध किए जाने पर वह अपनी बात से तुरत पलट गया।

गांधी जी प्रवासी भारतीय के आश्रयदाता से मिले। पर वह बड़ा ही पक्षपाती निकला। उसे तो केवल यूरोपीय मालिक के हित की ही चिन्ता थी। वहां बदनसीब बालसुन्दरम को इस बात के लिए राजी किया जाने लगा कि वह एक ऐसे दस्तावेज पर हस्ताक्षर करे जिसमें यह लिखा था कि उसे अपने मालिक से कोई शिकायत नहीं है। आश्रयदाता के व्यवहार से गांधी जी चकित थे। बालासुन्दरम गांधी जी से अब भी निवेदन कर रहा था कि वे उसका पीछा इस मालिक से छुड़वाएं। गांधी जी ने आश्रयदाता पर और दवाब बढाया पर वह किसी तरह राजी नहीं हुआ।

अंतिम विकल्प के तौर पर वे बालासुन्दरम को एक बार फिर मजिस्ट्रेट के पास ले गए। पूरा वाकया सुन कर मजिस्ट्रेट आग–बबूला हो गया। उसने मालिक को बुलवाया। गांधी जी इसके बाद भी नहीं चाहते थे कि उसे कोई सजा हो। यहां तक कि यदि वह एकरारनामे को तोड़ बालासुन्दरम को नए मालिक के पास जाने के लिए छोड़ देता तो वे अपनी शिकायत भी वापस लेने को तैयार थे। मजिस्ट्रेट ने मालिक को कानून अपने हाथ में लेने का दोषी करार दिया। उसने कहा कि यदि तुम दिए गए प्रस्ताव को नहीं स्वीकार करते हो तो इसके परिणाम भयंकर और गंभीर होंगे। इस चेतावनी का असर हुआ, और वह बालासुन्दरम को छोड़ने पर राजी हो गया। आश्रयदाता तो अब भी सहयोग करने को राजी नहीं था। उसकी जिम्मेदारी थी कि वह नए यूरोपीय मालिक की तलाश करता, पर उसने यह जिम्मेदारी गांधी जी पर टाल दी। गांधी जी को बालासुन्दरम के लिए नया मालिक खोजना था। भारतीयों को गिरमिटिया मजदूर रखने की इजाजत नहीं थी।

गांधी जी ने अपने मित्र ए.जे. एस्क्यू से बात की, वह बालासुन्दरम को अपने यहां रखने के लिए खुशी–खुशी राजी हो गया। पूरे उपनिवेश में बालासुन्दरम का मामला चर्चा का विषय बन गया। गांधी जी को बालासुन्दरम का मित्र मान लिया गया। उनके दफ्तर में गिरमिटियों का तांता लग गया। एकरारनामे के तहत मजदूर बने प्रवासी भारतीयों के मन में एक सुरक्षा की

भावना जगी कि दक्षिण अफ्रीका में अब कोई उनका हिमायती है जो वक्त जरूरत पर उनकी रक्षा करने को आगे आएगा। उनके बीच जो कोई भी पीड़ित था, अब गांधी जी को मददगार के रूप में देखने लगा। गांधी जी को अब लगने लगा कि वे उन सारे कानूनों का अध्ययन करें जो एकरारनामे के तहत लाए गए मजदूरों से संबंधित था। गांधी जी अब दुगुने उत्साह के साथ नटाल कांग्रेस के लिए काम करने लगे और उन्हें इस बात का संतोष था कि यह संस्था गरीब–मजदूरों के हित में आगे आकर उनकी समस्याओं का समाधान कर रही है। प्रवासी भारतीय के विभिन्न समुदाय के हितों का कांग्रेस से जोड़ना गांधी जी की भाव–भंगिमा में यह एक सुखद बदलाव था। बालासुन्दरम से भेंट काफी परिवर्तन कारी साबित हुआ।

बालासुन्दरम गांधी जी के दफ्तर में उनका आभार प्रकट करने आया। उसका साफा उसके हाथ में था। यह देख गांधी जी काफी दुखी हो गए। उन्होंने बालासुन्दरम को कहा कि फौरन इसे सिर पर रखो। काफी संकोच के साथ उसने साफा सर पर बांधा। सर पर साफा बांधने की जो खुशी बालासुन्दरम के मन में थी वह गांधी जी की नजरों से न छुप सकी। गांधी जी को इस बात का घोर आश्चर्य था कि इस गरीब को सताकर गोरों को क्या मिला? इस गरीब श्रमिक के सिर की पगड़ी हटाकर उन्हें कौन सा सुख मिलता है? गांधी जी कहते हैं,

"दूसरों को अपमानित करके लोग अपने को सम्मानित कैसे समझ सकते हैं, इस पहेली को मैं आज तक हल नहीं कर सका हूं।"

गांधी जी चाहते थे कि सामाजिक विषमता और अन्याय को मिटाने के लिए अहिंसात्मक तरीके अपनाए जाएं। गांधी जी की अहिंसा बलवानों की अहिंसा थी। वे मानते थे कि विरोधियों को पराजित करने के वजाय उनके हृदय–परिवर्तन से आने वाला बदलाव चिरस्थायी होता है। बालासुन्दरम ने इतिहास में एक छोटी सी लेकिन निर्णायक भूमिका निबाही, क्योंकि अनजाने में ही उसने गांधी जी को एक बड़े अभियान की आधारशिला रख दी थी।

सम्पादकीय

ये भी एक तरह की राजनीती है

दिल्ली मे एक नया तूफान आया है और वो भी राजनीती है जो अब तक आन्दोलन के नाम से जाना जा रहा था। अन्ना और अन्ना की टीम ने अपने आन्दोलन को राजनितिक पार्टी बनाने मे बदल दिया है टीम अन्ना के सभी सदस्य इस बात खुश ही नजर आ रहे है और इसका असर आम जनता के साथ साथ देश के सभी राजनितिक दलो और नेताओं के साथ देखने को मिल रहा है कोई समर्थन दे रहा है तो कोई इस निर्णय को बहुत हे गलत बता रहा है जनता भ्रमित सी हो गई है और अनशन को भी खघ्तम कर दिया गया है जब की इस अनशन से कोई हल नहीं मिला न हे सर्कार को कोई फर्क पड़ा अब सवाल यहाँ उठ रहा है की अन्ना का आन्दोलन प्रचार का हथकंडा था या टीम अन्ना को सच मे भ्रष्ट मंत्री , भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई करनी थी

हालाँकि मीडिया का रवैया भी इस बार के अनशन के लिए जादा अच्छा नहीं था पर सच सबने दिखाया अन्ना के आन्दोलन की सारी गतिवधियों को जनता से जोड़ा पहले अन्ना को गाँध ाी और आंधी बनाया फिर हाल ही के अनशन मे टीम अन्ना की राजनेतिक पार्टी बनाने को लेकर बड़ी बहस छिड़ गई अनशन के आखरी दिन भी अच्छी भीड़ देखने को मिली यहाँ तक की जी न्यूज ने पोलिंग भी की की अन्ना को राजनेतिक पार्टी बनानी चाहिये या नहीं उस पोलिंग मे भी लगभग 95 प्रतिशत लोगों की हाँ थी पर फिर भी अन्ना के कई समर्थक इस निर्णय से खुस नहीं है देश मे भ्रष्टाचार को खघ्तम करने के लिए एक आन्दोलन शुरू हुआ जिसके लिए देश की साड़ी जनता ने एक होकर अन्ना की टीम को सहयोग दिया और और लोकतंत्र के सभी स्तंभ अर्थात को हिला के रख दिया था

पर अब सवाल ये है कि अन्ना और उसकी टीम की करनी और कथनी में कितना अंतर है या है भी या नहीं! ये भी अपने आप में एक सवाल है, जो अनेक बार उठा है, लेकिन अब इसका उत्तर जनता को मिलना तय है। अन्ना की ओर से अपना नजरिया साफ करने से पूर्व ही इन सारी बातों पर, विशेषकर ''वैब मीडिया'' पर ''गर्मागरम बहस'' लगातार जारी है, जिसमें अभद्र और अश्लील शब्दावली का खुलकर उपयोग और प्रदर्शन हो रहा है। अनेक "न्यूजपोर्टल्स" ने शायद इस प्रकार की सामग्री और टिप्पणियों के प्रदर्शन और प्रकाशन को ही अन्ना टीम की भॉति खुद को पापुलर करने का "सर्वोत्तम तरीका" समझ लिया है।

अन्दोलन में अधिकतर वही लोग बढचढकर भाग लेते रहे हैं, जिन्हें देश के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप में कतई भी आस्था नहीं है। जिन्हें इस देश में अल्पसंख्यक, विशेषकर मुसलमान फूटी आँख नहीं सुहाते हैं और जो हजारों वर्षों से गुलामी का दंश झेलते रहे दमित वर्गों को समानता का संवैधानिक हक प्रदान किये जाने के सख्त विरोध में हैं। जो स्त्री को घर की चार दीवारी से बाहर शक्तिसम्पन्न तथा देश के नीति–नियन्ता पदों पर देखना पसन्द नहीं करते हैं। देखना ये है की अब आगे क्या होता है क्या अन्ना की राजनितिक पार्टी 2014 के चुनावों मे उतरती है या नहीं और अरविन्द केजरीवाल की कही हुई बात की 3 साल मे बदल देंगे भारत को ये सच हो पता है या नहीं और इन सब बातो का क्या असर पड़ता है दुसरे राजनेतिक दलों पर और अब आगे भारत की जनता कितना सहयोग करेगी टीम अन्ना का होना जो भी देश बदलाव चाहता है और भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनाना कहता है।

तम्बाकू निषेध दिवस

❑ दिलीप कुमार

पिछले दिनो मई 31 को तम्बाकू निषेध दिवस मनाया गया ,मेरे मन मे इसके संदर्भ मे एक विचार आया ,जो आज मै प्रस्तुत कर रहा हूँ. तम्बाकू धीमे जहर के रूप में समाज के सभी वर्ग के लोगों को प्रभावित कर रहा है। सार्वजनिक स्थानों पर खुले आम धूम्रपान से अनजाने में ही धूम्रपान नहीं करने वालों को भी इसका खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। भारत के हर दूसरा व्यरस्कह पुरूष बीड़ी, सिगरेट या तंबाकु के नशे का गुलाम है। अंतराष्ट्रीय तंबाकू सर्वेक्षण के मुताबिक भारत की 34.6 फीसदी व्यस्क आबादी को तंबाकू की लत है। इनमें से 47.9 फीसदी आबादी पुरूषों की है। महिलाओं में यह आंकड़ा 20.3 फीसदी है। धुआं रहित तम्बाकू (खैनी, जर्दा, गुटखा) इस्तेमाल करने वालों की संख्या 40: से अधिक है। देश में 32.9: पुरुष और 18.4: महिलाएं धुएं रहित तम्बाकू का सेवन करती हैं। इनमे से व्यस्क 26: और युवा 12.5: हैं। युवाओं में 16.2: लड़के और 7.2: लड़कियां है। एक रिपोर्ट के अनुसार 132 देशों में 13 से 15 वर्ष की उम्र के स्कूली बच्चे धुआं रहित तम्बाकू का उपयोग करते हैं।

बीमारी

तंबाकू जनित रोगों में सबसे ज्यादा मामले फेफड़े और रक्त से संबंधित रोगों के हैं जिनका इलाज न केवल महंगा बल्कि जटिल भी है।

कैंसर

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान (ICMR) की रिपोर्ट मे इस बात का खुलासा किया गया है कि पुरुषों में 50: और स्त्रियों में 25: कैंसर की वजह तम्बाकू है। इनमें से 90: मुंह के कैंसर हैं। धुएं रहित तम्बाकू में 3000 से अधिक रासायनिक यौगिक हैं, इनमें से 29 रसायन कैन्स्सर पैदा कर सकते हैं। बहरहाल तंबाकू के खतरे को नजरअंदाज करना न सिर्फ भयानक होगा बल्कि आत्मघाती भी होगा। तंबाकू जनित कुछ आंकड़ों पर भी गौर कर लें। विश्व स्वास्थ्य संगठन का आंकड़ा कहता है कि

1997 के मुकाबले वर्ष, 2005 तक तंबाकू निषेध कानूनों के लागू करने के बाद वयस्कों में तंबाकू सेवन की दर में 21 से 30 प्रतिशत की कमी आई थी, लेकिन इसी दौरान हाईस्कूल जाने वाले 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में तंबाकू का सेवन 60 प्रतिशत बढ़ गया था। अमेरिकन कैंसर सोसायटी का आंकड़ा है कि प्रत्येक 10 तंबाकू उपयोगकर्ता में से 9 महज 18 वर्ष की उम्र से पहले तंबाकू का सेवन शुरू कर चुके होते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि सन 2050 तक 2.2 अरब लोग तंबाकू या तंबाकू उत्पादों का सेवन कर रहे होंगे। इस आकलन से अंदाजा लगाया जा सकता है कि तंबाकू के खिलाफ कानूनी और गैर सरकारी अभियानों की क्या गति है और उसका क्या हश्र है।

मौत

तंबाकू के खतरे को नजरअंदाज नहीं

करना चाहिए। धूम्रपान तथा तम्बाकू जनित उत्पादों के सेवन से मरने वालों का आंकड़ा विगत कुछ वर्षों में बढा है। दुनिया में सर्वाधिक मौतें तम्बाकू उत्पादों के सेवन से होने वाली बीमारियों से हो रही है। दुनिया में होने वाली हर 5 मौतों में से एक मौत तंबाकू की वजह से होती है। हर 8 सेकेंड में होने वाली एक मौत तंबाकू और तंबाकू जनित उत्पादों के सेवन से होती है।

राजस्व

लोग कहते हैं तम्बाकू उत्पाद काफी सरकार को काफी राजस्व मिलता है। हकीकत पर नजर डालें –– देश भर में बीड़ी उद्योग में लगे बीड़ी बनाने में 29 रुपए से 78 रुपए का भुगतान हो रहा है जबकि इस उद्योग के उत्पादकों को इससे कई गुना अधिक लाभ हो रहा है। यहां भी शोषण ही हो रहा है। तम्बाकू उत्पादों से होने वाला राजस्व महज 12 हजार करोड़ रुपए है जबकि इससे होने वाली मौत और बीमारियों से बचाव के लिए सरकार इससे कई गुना अधिक 40 हजार करोड़ रुपए हर वर्ष खर्च कर रही है।

जनजागरण

फिर भी तंबाकू के उपभोग में कमी न होना मानव सभ्यता के लिए एक गंभीर सवाल है। तंबाकू के बढ़ते खतरे और जानलेवा दुष्प्रभावों के बावजूद इससे निपटने की हमारी तैयारी इतनी लचर है कि हम अपनी मौत को देख तो सकते हैं लेकिन उसे टालने की कोशिश नहीं कर सकते। यह मानवीय इतिहास की एक त्रासद घटना ही कही जाएगी कि कार्यपालिका, विधायिका तथा न्यायपालिका की सक्रियता के बावजूद स्थिति नहीं संभल रही। तम्बाकू उत्पादों के सेवन के बारे में कानून बन जाने के बाद भी इनकी अनुपालना नहीं हो रही है। तम्बाकू सेवन के खिलाफ जनजागरण में मीडिया के साथ ब्लॉगजगत की भी अहम भूमिका हो सकती है। रचनात्मक लेखन से आम आदमी को जागरूक किया जाना चाहिए।

हिंदी विकिपीडिया उर्फ भाषा की रूढ़ समझ

❑ गंगा सहाय मीणा
(स. प्रोफेसर, जेएनयू)

विकिपीडिया इंटरनेट पर उपलब्ध एक सर्वसुलभ विश्वकोश है। विकिपीडिया शब्द विकि और इनसाइक्लोपीडिया शब्दों को मिलाकर बना है। विकिपीडिया का मुख्य सर्वर टैंपा, फ्लोरिडा में है। विकिपीडिया की खासियत यह है कि इसका उपयोग निःशुल्क होने के साथ ही इसे कोई भी पाठक संपादित कर सकता है। यानी संबंधित विषय पर अगर एक सामान्य पाठक भी सामग्री जोड़ना या बदलना चाहता है, तो विकिपीडिया उसे यह अधिकार देता है। हर इच्छुक व्यक्ति इस वृहद आंदोलन का हिस्सा बन सकता है। जोड़ी या संपादित की गई सामग्री पर विकिपीडिया के वरिष्ठ योगदानकर्ता और प्रबंधक नजर रखते हैं ताकि कोई विकिपीडिया के लोकतांत्रिक स्वरूप का फायदा उठाकर अवांछित सामग्री न जोड पाये। विकिपीडिया के संस्थापक जिमी वेल्स के शब्दों में यह विश्व के प्रत्येक व्यक्ति के लिए, उनकी अपनी भाषा में एक बहुभाषीय, मुक्त, सबसे अधिक मुमकिन गुणवत्ता वाला विश्वकोश बनाने और वितरित करने का एक प्रयत्न है। इसी के तहत विकिपीडिया ने विश्वकोश की उन्नत सामग्री को संजोकर सीडी निर्माण का कार्य भी शुरू किया है।

विकिपीडिया अंग्रेजी के अलावा भी दुनिया की कई बड़ी भाषाओं में उपलब्ध है। भारतीय भाषाओं में हिंदी, बांग्ला, मराठी, मलयालम, तमिल, उड़िया, संस्कृत आदि में विकिपीडिया उपलब्ध है। हिंदी विकिपीडिया इस जुलाई में अपने दसवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है लेकिन इसके बावजूद वह अंग्रेजी विकिपीडिया (जो कि उससे उम्र में मात्र दो वर्ष बड़ा है) की तुलना में काफी पिछड़ा हुआ है। नामांकित सदस्यों की संख्या 68 हजार से अधिक होने के बावजूद हिंदी विकिपीडिया की हालत खस्ता है। उल्लेखनीय है कि कोई भी व्यक्ति नामांकित सदस्य बने बिना भी योगदान दे सकता है। अंग्रेजी विकिपीडिया पर उपलब्ध 40 लाख लेखों की तुलना में हिंदी विकिपीडिया पर मात्र 1 लाख लेख हैं। ये लेख भी विश्वकोशीय गुणवत्ता की अपेक्षानुसार बेहद कमजोर हैं। अधिकांश लेख या तो अंग्रेजी विकिपीडिया के संबंधित लेखों का खराब अनुवाद हैं या फिर कहीं से कॉपी–पेस्ट की गई सामग्री से निर्मित, या आधे–अधूरे। इसकी सबसे बडी वजह हिंदी विकिपीडिया पर सक्रिय सदस्यों का अभाव है। चूंकि किसी भी सर्च इंजन पर कोई भी सामग्री ढूंढने के दौरान विकिपीडिया का लिंक सबसे पहले आता है, इसलिए हमें विकिपीडिया को लेकर गंभीर होना होगा।

विकिपीडिया पर बनाए जा रहे लेखों के संबंध में किसी भी प्रकार के संदेह, समस्या को शेष सदस्यों से साझा करने का प्लेटफॉर्म चौपाल है। किसी मुद्दे पर सहमति न बनने की स्थिति में मतदान का तरीका अपनाया जाता है जिसमें सामान्यतः सक्रिय सदस्य ही हिस्सा ले पाते हैं (क्योंकि शेष सदस्यों को पता ही नहीं चल पाता मतदान का) । पिछले दिनों विकिपीडिया चौपाल पर देवनागरी अंकों के स्थान पर अंतर्राष्ट्रीय अंकों व आसान भाषा का प्रयोग को लेकर बडी लंबी बहस हुई जिसमें यह बात रखी गई कि चूंकि विकिपीडिया सूचनाओं का एक लोकतांत्रिक और लोकप्रिय माध्यम है इसलिए हिंदी विकीपीडिया पर आसान भाषा व भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय

रूप का प्रयोग होना चाहिए। यह दुखद है कि लंबी बहस और मजबूत तर्कों के बावजूद इस मुद्दे पर सहमति नहीं बनाई जा सकी। इसकी वजह हिंदी विकीपीडिया पर भाषा की रुढ़ समझ रखने वाले संपादकों–प्रबंधकों का बहुमत व वर्चस्व है। उनका मानना है कि हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि खतरे में है इसलिए देवनागरी अंकों को बचाया जाना बहुत जरूरी है और हिंदी विकिपीडिया इसका एक अच्छा माध्यम हो सकता है।

हिंदी विकिपीडिया पर देवनागरी अंकों के स्थान पर भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप को लागू करने के लिए निम्न तर्क प्रस्तुत किये गए– हिंदी विकिपीडिया मुख्य रूप से हिंदी समझने वाले तमाम पाठकों के लिए है, न कि मात्र हिंदी में उच्च शिक्षित लोगों के लिए, और हिंदी में साक्षर लोगों में भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप को लगभग सभी लोग समझते हैं। 2) भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार प्रचलित अंक वे रोमन नहीं, भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप है और राजभाषा के प्रावधानों के अनुसार अंकों के इसी रूप का उपयोग होना चाहिए। 3) भारत में हिंदी माध्यम के विद्यालयों में यही अंक प्रयोग में लाये जाते हैं। यानी ये हिंदीभाषी समुदाय के सहज विवेक का हिस्सा हैं। 4) हिंदी माध्यम की शिक्षा में पहली कक्षा से पीएच.डी. तक की पाठ्य पुस्तकों में इन्हीं अंकों का प्रयोग होता है। 5) हिंदी के छोटे से लेकर बडे प्रकाशकों की पुस्तकों और संदर्भ ग्रंथों में इन्हीं अंकों का प्रयोग होता है। ये विकि नीति है कि किसी भी बात की सत्यता जांचने के लिए संबंधित किताबों और संदर्भ ग्रंथों को प्रामाणिक माना जाता है। 6) हिंदी की साहित्यिक संस्थाओं– साहित्य अकादमी, प्रगतिशील लेखक संघ, जनवादी लेखक संघ, जन संस्कृति मंच आदि में भी भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप प्रयुक्त होता है। 7) हिंदी के सबसे बडे समाचार पत्रों– दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, हिंदुस्तान, नवभारत टाइम्स, जनसत्ता (साहित्य समाज में सम्मानित), राष्ट्रीय सहारा, राजस्थान पत्रिका, अमर उजाला आदि सभी में इन्हीं अंकों का प्रयोग होता है। 8) भारत सरकार के सरकारी दस्तावेजों में भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप का प्रयोग होता है। यह बात इसलिए महत्वपूर्ण है कि आम आदमी से सरकार तक केवल भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय अंकों का प्रचलन है। 9) सभी महत्वपूर्ण हिंदी वेबसाइटें– बीबीसी हिंदी, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, राजभाषा विभाग आदि भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप का प्रयोग करती हैं। 10) हिंदी की सभी बडी साहित्यिक, गैर–साहित्यिक (समाचार विश्लेषण, विचार विश्लेषण वाली) पत्रिकाओं में भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप प्रयुक्त होता है। 11) विश्वविद्यालयों के हिंदी प्रकाशनों में भी भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप का प्रयोग होता है। 12) सभी जगह (अकादमिक और गैर–अकादमिक जगत में) भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप का प्रचलन है।

इतने मजबूत तर्कों के बावजूद देवनागरी अंकों के कट्टर समर्थक अपनी बात पर अड़े रहे जिसके फलस्वरूप हिंदी विकिपीडिया पर भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप को लागू नहीं किया जा सका। बहुमत कुतर्क को भी विजयी बना सकता है, यह बहस इसका उदाहरण है। यह बात किसी से छिपी नहीं है कि देवनागरी अंक दुर्बोध हैं और इसी वजह से लोग इनका प्रयोग करना लगभग बंद कर चुके हैं। भाषा के प्रति रूढ़ समझ रखने वालों ने हिंदी विकिपीडिया पर कब्जा कर लिया है, जहां असहमति के लिए कोई स्थान नहीं है। इनमें से अधिकांश लोग गैर–भाषाई व गैर–साहित्यिक क्षेत्रों के हैं, इसलिए वे भाषा की बदलती प्रकृति से न तो परिचित हैं और न ही उसे स्वीकार करने को तैयार यह बात हिंदी विकिपीडिया पर उपलब्ध लेखों के स्वरूप का जायजा लेकर भी पहचानी जा सकती है। हालांकि गलती भाषा व साहित्य के जानकार लोगों की है जिन्होंने हिंदी विकिपीडिया पर जाकर इन रूढ़ समझ वालों के वर्चस्व को चुनौती देकर विकिपीडिया को समृद्ध करने में कोई रूचि नहीं दिखाई है, फिर भी विकिपीडिया पर कब्जा किये हुए लोगों को भी कुछ बातें ध्यान में रखनी चाहिए। विकिपीडिया एक सुलभ ज्ञानस्रोत है, अपनी कोई जिद पूरी करने के आंदोलन का केन्द्र नहीं। विकिपीडिया किसी व्यक्ति या समूह की जागीर भी नहीं है कि वह अपनी दमित इच्छाओं को वहां पूरा करे। इसके लिए वे स्वतंत्र पुस्तक लिख सकते हैं जिसमें मनचाहे अंकों का इस्तेमाल करें। अगर पुस्तक अनुकूल लगी तो पाठक उसके पास जायेंगे, नहीं तो नकार देंगे। विकिपीडिया एक लोकतांत्रिक विश्वकोश है जिसकी नीति में व्यक्तिगत विचारों के लिए कोई जगह नहीं है। यहां ज्ञान का वही रूप अपेक्षित है जो जनता के बीच प्रचलित हो। चूंकि जनता के बीच भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप प्रचलित है, इसलिए यहां भी उसी का प्रयोग किया जाना चाहिए।

विकिपीडिया की विश्वसनीयता और सत्यता पर काफी विवाद होता रहा है। वेबसाइट पर आसानी तथा बर्बरता के साथ संपादन करने की क्षमता, लेखों में असमान गुणवत्ता इत्यादि की काफी आलोचना भी हुई है। फिर भी इसके मुक्त वितरण, निरंतर और काफी संख्या में बदलाव, विभिन्न क्षेत्रों और भाषाओं के समावेश ने इसे इंटरनेट पर विश्व का सबसे अधिक लोकप्रिय और पठनीय संदर्भ बना दिया है। इसलिए अंकों के स्वरूप का प्रश्न हो या अन्य कोई प्रश्न, हमें हिंदी विकीपीडिया को भी आसान बनाकर सर्वसुलभ और पठनीय बनाने में मदद करनी चाहिए। साथ ही हिंदी टाइपिंग जानने तमाम हिंदीप्रेमियों को अपने–अपने क्षेत्र से जुडे पृष्ठों को समृद्ध करने में योगदान देना चाहिए जिससे कि ज्ञान के लोकतांत्रीकरण की इस प्रक्रिया को बल मिल सके।

रामविलास शर्मा जन्मशती आयोजन 22 को

नई दिल्ली। सुप्रसिद्ध आलोचक डॉक्टर रामविलास शर्मा (1912–2000) की जन्मशती के अवसर पर जन संस्कृति मंच की ओर से 22 जुलाई, 2012 को साहित्य अकादमी सभागार, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली में सुबह 10 बजे से विशेष आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में बीज वक्तव्य प्रोफेसर मैनेजर पाण्डेय का होगा।

पहला सत्र का विषय है– साम्राज्यवाद–विरोधी आलोचक रामविलास शर्मा। इस सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर राजेन्द्र कुमार करेंगे। प्रोफेसर रविभूषण और प्रोफेसर मुरली मनोहर प्रसाद सिंह परिचर्चा में भाग लेंगे। दूसरा सत्र दोपहर 1 बजे शुरू होगा। इसका विषय है– हिन्दी आलोचना में साम्राज्यवाद विरोध का समकालीन सन्दर्भ। इस सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी करेंगे। प्रोफेसर अवधेश प्रधान और प्रोफेसर नित्यानंद तिवारी परिचर्चा में भाग लेंगे।

हिंदी विकिपीडिया से संबंधित महत्वपूर्ण आलेख

आज तक एक भी ऐसा हिंदी भाषी नहीं मिला जिसने यह कहा हो कि उसकी अंग्रेजी अच्छी नहीं है। विषयान्तर का खतरा मोल लेते हुए बताना चाहूँगी कि तब तो जल्दी ही आपसे मिलना पड़ेगा क्योंकि मैं तो सदा से कहती, लिखती और बताती आई हूँ कि मैं अग्रेजी नहीं जानती और केवल किसी तरह कामचलाऊ प्रयोग कर पाती हूँ , जिसके कारण भारतीय मुझे अत्यंत हास्यास्पद मानते हैं, जबकि ब्रिटिश और नॉश्क इसे बड़े सहज तरीक से लेते रहे हैं। मैं उस युग और उस पिता की प्रतिनिधि हूँ जिन्होने मेरे प्रारंभिक शिक्षा के एक विषय अग्रेजी की कक्षा और परीक्षा से मुझे इतना अलग रखा कि 100 – 100 विषय के पाँच पत्रों में से मैं केवल 4 परीक्षाएँ देती और प्राप्तांक चार की अपेक्षा पाँच के कुल अंकों के अनुसार मिलते अर्थात् 500 में से एक विषय के अंक लगातार 5 वर्ष तक परीक्षा के बॉयकॉट कर सम्मिलित न होने के कारण शून्य मिलते रहे और अपनी गाड़ी चलती रही, परीक्षा 400 अंक की देती और परिणाम 500 अंक में से मिलता। रही अंकों की दुर्बोधता के तर्क की बातय तो जिस युग में सारे विश्व के भाषाविज्ञानी लिपियों और भाषाओं को विश्व धरोहर मान कर मरने से बचाने के युद्ध में जूटे हैं, उस युग में देवनागरी अंकों पर ऐसी कृपा दृष्टि कोई हिन्दी का प्रोफेसर ही कर सकता है कि वह उन्हें खारिज करे और खारिज करने के समस्त तर्क देते हुए प्रयोक्ताओं पर आक्रामक भी हो जाए। कोई आश्चर्य नहीं कि आगामी दिनों में ऐसे ही लोग देवनागरी को भी दुरूह कह कर रोमन में हिन्दी लिखने का झण्डा लिए समानान्तर युद्ध चलाएँगे। ऐसे लोगों को भारत के सर्वाधिक शिक्षित प्रदेशों में से एक महाराष्ट्र जाना चाहिए और देखना चाहिए कि वहाँ बसों, टैक्सियों और वाहनों पर नंबर प्लेट भी देवनागरी अंकों की होती है। जैसे रस और रूप देखने वाले के मन और दृष्टि में होता है तैसे ही दुर्बोधता भी व्यक्ति के मस्तिष्क में होती है, किसी लिपि और ज्ञान में नहीं। वरना सारा चीन चित्रलिपि ही से कैसे सर्व सम्पन्न हो जाता!

प्रवासी पक्षियों पर मौसम का प्रभाव

❑ एन. ए. आई. डेस्क

बदलते मौसम का प्रवासी पक्षियों पर काफी प्रभाव पड़ता है। यात्रा का आरंभ होना तो मौसम तय करते ही हैं, साथ ही किस रास्ते से उन्हें गुजरना चाहिए यह भी मौसम के अनुरूप ही तय किया जाता है। टिटहरी (लैपविंग), लवा (लार्क) और स्टरलिंग, की प्रवास

यात्रा, चाहे शरद ऋतु में शुरु की गई हो चाहे वसंत में, वातावरण का तापमान और हवा के दवाब पर यह काफी कुछ निर्भर करता है। पर कई ऐसे भी प्रवासी पक्षी हैं, जैसे बतासी (स्विफ्ट), पिल्लख, श्रीक (लैनियस क्रिस्टेटस), स्पैरो हॉक, क्लिफ स्वालो आदि, जो समय के बड़े पक्के होते हैं और चाहे कैसा भी मौसम हो, आंधी आए, या तूफान, वर्षा पड़े या बर्फ, समय से ही अपनी यात्रा की शुरुआत करते हैं। कहा जाता है कि शरद ऋतु में इनके पहुंचने की तारीख इतनी निश्चित होती है कि बोर्निओ के अंदरूनी पहाड़ी भागों में रहने वाले केलाबिट्स जनजाति के लोग उनके आगमन से अपने कैलेंडर सही करते हैं। वर्षों के अध्ययन के आधार पर पता चला है कि वाशिंगटन, यू.एस.ए. के खलिहानों में पहुंचने वाले अबाबील 12 अप्रैल को, घरेलु फुदकी चिड़िया 12 अप्रैल को, छोटी गोरैया 22 अप्रैल को, पहुंच जाते हैं। कुछ लोग तो यहां तक कहते हैं कि उनके आगमन का घंटा भी निर्धारित होता है। ऐसे प्रवासी पक्षियों को मूल प्रवृत्ति वाला प्रवासी (प्देजपदबज डपहतंदजे) कहा जाता है। मौसम का असर कुछ पक्षियों पर इतना अधिक होता है कि इनकी भूरे रंग की पक्षति (प्लुमेज) सफेद हो जाती है और इनका आहार भी बदल जाता है। जाड़े में ये कीट–पतंगों की जगह टहनी पत्तों के खाकर अपना गुजारा करते हैं। कभी यदि मार्च महीने में ठंड अधिक बढ़ जाए तो ये पक्षी बड़ी संख्या में मर जाते हैं।

कोरासियास बेंघालेंसि

एक मित्र ने पिछले एक पोस्ट में नीलकंठ पर जानकारी चाही थी। भारत में यह पक्षी बहुत ही शुभ माना जाता है। हमारे इधर तो कहते हैं कि किसी यात्रा के समय यह दिख जाए तो यात्रा शुभ होती है और आप जिस किसी भी इच्छा से घर से निकले हैं जरूर पूरी होगी। हम जब परीक्षा देने घर से निकलते थे तो रास्ते भर यह इच्छा रहती थी कि नीलकंठ के दर्शन हो जाए। बेटियों की शादी तय करते जाते वक्त एक पिता की भी यही तमन्ना रहती थी। कुछ समुदाय मकर संक्रांति के अवसर पर इस पक्षी को देखना अच्छा शगुन मानते हैं, जबकि कुछ दशहरे के दिन। उसे कई जगह ृजतरा' बनाना भी कहते हैं। 30 से.मी. के आसपास के आकार वाला यह पक्षी भारत में व्यापक रूप से पाया जाता है। नाम

से ही पता चलता है कि यह नीले रंग का होता है। इसका पेट वाला भाग हल्का नीला होता है जबकि छाती का हिस्सा बादामी–भूरा। इसका सिर बड़ा और चोंच काली होती है। उड़ते हुए यह काफी आकर्षक लगता है। देहातों, मैदानों, चारागाहों रेगिस्तानों, वन प्रदेश, सड़क के किनारे वृक्षों, बागों आदि में यह बड़े आसानी से पाए जाते हैं। हमने तो कई बार इसे टेलीफोन के तारों पर बैठा हुआ देखा है। वहां ये अपने शिकार कीड़ों, आदि की ताक में रहते हैं। शिकार को यह सीधे नहीं निगल जाता, बल्कि उसे जोर–जोर से पटक–पटक कर मार डालता है।

सालिम अली, प्रसिद्ध पक्षी विज्ञानी का कहना था कि ये कृषि के लिए बहुत ही लाभकारी होते हैं। इसका कारण यह है कि ये फसल को हानि पहुंचाने वाले कीट–पतंगों को नष्ट कर देते हैं। प्रजनन काल में नीलकंठ काफी शोर मचाते हैं। हवाई करतब भी करते हैं। इससे वे अपने मादा को आकर्षित करते हैं। इनका प्रजनन काल मार्च से जुलाई तक होता है। इनका घोंसला पेड़ के कोटर पर होता है। सामान्यतया इसकी ऊचाई 5–6 मीटर पर होती है। मादा एक बार में 4–5 अंडे देती है। अंडे का रंग सफेद होता है। नर और मादा दोनों मिलकर अंडे सेते हैं। चूजों का पालन–पोषण भी दोनों मिलकर करते हैं।

हिंदी अंक दुर्बोध हैं यह तो हास्यास्पद है

पूरी की पूरी हिंदी ही दुर्बोध है। जो हिंदी का प्रोफेसर है वह यह कहे कि हिंदी के अंक दुर्बोध हैं तो उसकी मानसिकता समझना काफी आसान है। हो सकता है कि वे अँग्रेजी के प्रोफेसर हों। अंकों के विषय में एक बार निर्णय हो जाने के बावजूद बार बार बहस करना और उन्हें अँग्रेजी की ओर ढकेलना यह बताता है कि एक सक्रिय आतंकवाद हिंदी के विरोध में लगातार आक्रमण कर रहा है। लेखक का उद्देश्य विकिपीडिया को सँवारना नहीं उसे हिंगलिश बनाना है। वैसे भी अँग्रेजी विकिपीडिया से हिंदी विकिपीडिया की तुलना करना बेकार है। भारत में कितने लोगों के पास कंप्यूटर है नेट है बिजली है जो हिंदी विकिपीडिया पर काम करेंगे। ले देकर जो हिंगलिश लोग पहुँचते हैं वे काम कम करते हैं और अंग्रेजियत बघारने में ज्यादा समय लगाते हैं।

मीणा जी को अंग्रेजी अंकों के प्रति काफी श्रद्धा है। उन्हें भारत छोड़कर इंगलैंड में रहना चाहिये।

हिन्दी पढ़–लिखकर किस्मत खराब नहीं करनी चाहिये। वे किसी हिंदी चीज का भला नहीं कर सकते बल्कि ये तो हिंदी का भी सत्यानाश कर के ही रहेंगे। इनका सारा ध्यान इसी बात पर लगा रहता है कि सही हिंदी में क्या हो रहा है उसको हटाओ और अंग्रेजी की तरफ ढकेलो जबकि होना यह चाहिये कि जो चीजें अँग्रेजी में हैं उन्हें धीरे धीरे हिंदी में लाया जाये।

हिंदी का मानक क्या बीबीसी से सेट होकर आएगा। जो अँग्रेज कहेंगे वे आप मानेगे? स्वाभिमान भी कोई चीज है कि नहीं? स्वाभिमान को रूढ़िवाद का नाम देंगे? जिस भारत ने पूरे विश्व को अंक सिखाए वे उन्हें विदेशी अंकों का प्रयोग करना चाहिये क्यों कि हम भारतीय रहे ही नहीं। हम हिंगलिशतानी हो गए हैं। प्रो. मीणा का यह पूरा लेख हिंगलिश मानसिकता से भरा हुआ है। शर्म... शर्म... अंग्रेजी प्रशासकों ने इन्हें इसी लिये हिंदी विकीपीडिया में रखा है। काश हिंदी का अपना विकिपीडिया होता। विकिपीडिया में काम करना कोई गर्व की बात नहीं यह केवल अंग्रेजी को बढ़ावा देना और दूसरी भाषाओं का खात्मा करना है। क्यों कि इसमें मीणा जैसे लोगों को प्रोत्साहित किया जाता है। पहले हमें अँग्रेजी की बैसाखी पर ले आएँगे फिर वे बैसाखियाँ भी छीन लेंगे। मीणा जी को बैसाखियाँ मुबारक लेकिन जितनी जल्दी हिंदी वाले हिंदी अंक अपना लें उतना अच्छा। पहले प्रकाशन के जो फर्मे आते थे उसके टाइपसेट में अँग्रेजी अंक आते थे लेकिन अब तो सब कंप्यूटराइज्ड है इस कारण सभीप्रकाशकों को गर्व और तत्परता के साथ हिंदी अंक अपनाने चाहिये। अब तो यह बहुत आसान है। तमाम स्वाभिमानी हिंदी प्रकाशकों ने हिंदी अंक अपनाने शुरू भी कर दिये हैं।

ओलम्पिक, चीन और भारत

❑ अभिरंजन कुमार

आदमी के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए जिस तरह भोजन और

शिक्षा की जरूरत होती है ठीक उसी तरह खेल–कूद की भी आबश्यकता होती है बरसो से चली आ रही इस परम्परा को 16 जून 1896 को ओलंपिक का नाम दिया गया जो एथेंस में आयोजित हुआ ओलंपिक के नाम से मशहूर यह खेल हर 4 साल बाद आयोजित किया जाता है इस खेल में मुख्य रूप से दौड, साइकल दौड, तैराकी, कुश्ती, निशानेबाजी, टेनिस आदि है।

1896 से खेले जाने बाले ओलंपिक में भारत 1990 से हिस्सा ले रहा है। भारत के खिलाडी अबतक (2008 ओलंपिक) 9 स्वर्ण, 4 रजत और 7 कांस्य समेत सिर्फ 20 पदक जीत पाया है। बीजिंग ओलंपिक 2008 में 1 स्वर्ण एवं 2 कांस्य समेत कुल 3 पदक जीता जो अबतक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है

अगर बात की जये चीन की तो (1984) से चीन लागातार ओलंपिक में हिस्सा ले रहा है। चीन ने वर्सिलेना ओलंपिक (1992) अटलांटा ओलंपिक (1996) मे चौथे स्थान , सिडनी ओलंपिक (2000) में तीसरे स्थान ,एथेंस ओलंपिक (2004) में दूसरे स्थान पर रहा। 2008

बीजिंग ओलंपिक में तो अपना सारा पिछला रिकॉर्ड तोड़ अमेरिका को पीछे छोड़कर चीन शीर्ष पर जा पंहुचा। चीन अकेले 51 स्वर्ण पदको के साथ कुल 100 पदक जीत कर शिखर पर पहुंच गया। 2008 ओलंपिक खत्म होते– होते चीन ने तो अपना मुकाम हासिल कर लिया। जिसका इन्तजार चीन के लोगो को था। क्या भारत भी हासिल करेगा यह मुकाम ? अगर करेगा, तो कब तक ? क्या हम सब भारतीय चमचमाती स्वर्ण पदक एक साथ देख पायेंगे, कई खिलाडियो के गले में ? आबादी के मामले में तो हम सिर्फ चीन से ही पीछे है फिर ओलंपिक में बहुतो से पीछे। आखिर क्यू ? क्या हमारे पास खिलाडी नहीं है या हम खेलना नहीं चहाते? खैर जो भी हो इस उमिद्द के साथ की शायद 30 बे ओलंपिक में 81 सदस्यी खिलाडी दल कुछ पदक जीत कर हमारे देश का नाम ओलंपिक के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में भारत का नाम दर्ज करें इस उम्मीद के साथ सभी खिलडियो को मेरे तरफ से शुभकमानायें।

यह न्याय है कि जादू-टोना?

❑ एन. ए. आई. डेस्क

कानून मंत्री सलमान खुर्शीद ने राहुल गांधी के बारे में जो बयान किया है, वह मीडिया का ध्यान खींच रहा है लेकिन उन्होंने भारत की न्याय-व्यवस्था

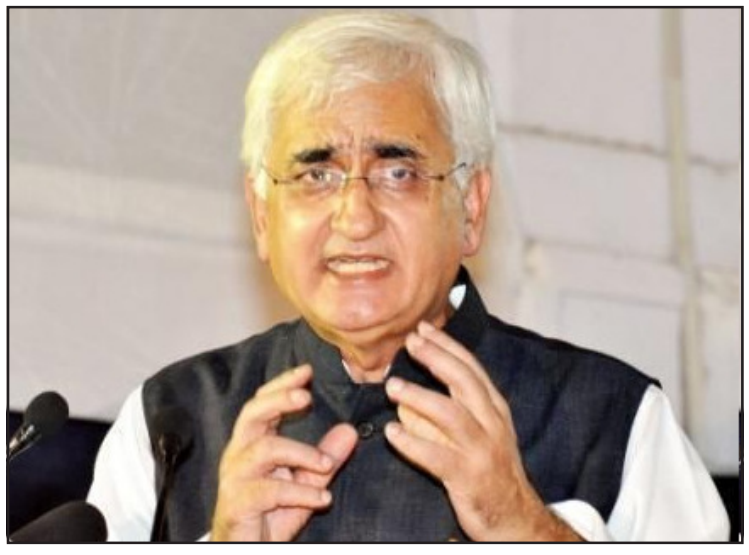

पर जो नया सुझाव दिया है, वह हाशिए में चला गया है। उन्होंने कहा है कि वादियों और प्रतिवादियों को अदालतों के फैसले उनकी भाषा में उपलब्ध करवाए जाएं। ऐसी समझदारी की बात इसके पहले किसी कानून मंत्री ने शायद कभी नहीं कही। किसी प्रधानमंत्री, किसी कानून मंत्री या किसी राजनेता को यह बात अभी तक सूझी क्यों नहीं?

कारण स्पष्ट है। दो सौ साल की गुलामी ने भारत के दिमाग को ही ठस्स कर दिया है। हम यह कल्पना ही नहीं करते कि हमारा कानून हमारी भाषा में बन सकता है। अदालतों की बहस और फैसले अपनी भाषा में तभी होंगे, जबकि कानून अपनी भाषाओं में बनेंगे। खुर्शीद ने यह तो कह दिया कि फैसले स्वभाषाओं में उपलब्ध करवाए जाएं लेकिन यह नहीं कहा कि वे स्वभाषाओं में ही लिखे जाएं। वे होंगे तो अंग्रेजी में ही लेकिन खुर्शीद की बात मान ली जाए तो उनके अनुवाद कई भाषाओं में हो जाएंगे। सरकारी अनुवाद की लीला से कौन परिचित नहीं है? मक्खी पर मक्खी बिठाने में निष्णात हमारे बाबू उन अंग्रेजी फैसले का कचूमर हिंदी तथा अन्य भाषाओं में कैसा निकालेंगे, यह किसी को बताने की जरूरत नहीं है। मूल अंग्रेजी फैसलों और अनुवाद से उठी समस्याओं को निपटाने के लिए नए मुकदमे दायर किए जाएंगे। भारत के न्यायालय पागलखानों में तब्दील हो जाएंगे। लोगों को न्याय सुलभ करवाना तो दूर रहा, वे अनुवाद की गुत्थियों में उलझ जाएंगे।

इसका मतलब यह नहीं कि खुर्शीद का सुझाव निरर्थक है। एक अर्थ में वह क्रांतिकारी है। उन्होंने आम आदमी की तकलीफ को समझा तो सही। वादी और प्रतिवादी को पहले तो यह ही ठीक से समझ में नहीं आता कि अदालत में हो क्या रहा है। उनके वकील आपस में क्या गिटपिट कर रहे हैं। फिर जो फैसला अंग्रेजी में आता है, वह भी उसकी समझ के परे होता है। वह जादू-टोने की तरह हो जाता है। उसका वकील उसे जो सार-संक्षेप समझा देता है, उससे उसे संतोष करना पड़ता है। कई लोगों को उम्र-कैद काट देने के बाद पता चलता है कि उनके वकील ने जज को वह मुख्य तर्क समझाया ही नहीं, जो उसे दोषमुक्त कर सकता था। सारा कानून, वकीली बहस और फैसले अंग्रेजी में होने के कारण वादी और प्रतिवादी अदालत में अपनी बात कहने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाते। इसका अर्थ यह नहीं कि फैसले अंग्रेजी में होते हैं तो किसी को न्याय मिलता ही नहीं। न्याय मिलता तो है लेकिन जिसको न्याय मिलता है, वह इस प्रक्रिया का हिस्सा नहीं होता। यह मूल मानव अधिकार का पूर्ण उल्लंघन है। यह लोकतंत्र का भी मजाक है। जो कानून और न्याय-व्यवस्था लोक की समझ के परे है, उसे लोकतांत्रिक कैसे कहा जाए?

इसीलिए खुर्शीद के सुझाव में से लोकतंत्र की सुगंध आती है लेकिन यह सुगंध इत्र की नहीं, परफ्यूम की है। इस सुंगध को गहरी और सुदीर्घ बनाने के लिए यह जरूरी है कि देश के सारे कानून मूल रूप से हिंदी में बनें। समस्त भाषाओं में मौलिक कानून आगे जाकर बन सकते हैं। उनका अनुवाद हिंदी से अन्य भारतीय भाषाओं में हो सकता है। अब यहां प्रश्न किया जा सकता है कि यदि आप अंग्रेजी कानून के अनुवाद रद्द करते हैं तो हिंदी कानून के अनुवाद को मान्य कैसे करते हैं? इसका उत्तर सरल है। पहला, समस्त भारतीय भाषाओं की भाव-भूमि एक ही है। उनकी मूल धारणाएं, मुहावरें, कहावतें, शैलियां लगभग एक जैसी हैं। उनके परस्पर अनुवाद में विभ्रम की गुंजाइश अंग्रेजी के मुकाबले बहुत कम है। दूसरा, उन्हें संस्कृत, अरबी, फारसी जैसी प्राचीन भाषाओं की शब्द-राशि सहज उपलब्ध है। तीसरा, अंग्रेजी के मुकाबले इन भाषाओं के अनुवादकों की संख्या काफी बड़ी होगी। चौथा, अपनी भाषा में कानून बनने के कारण अंग्रेजी कानून की गुलामी से भी भारत तत्काल मुक्त हो जाएगा। भाषा के साथ-साथ संस्कार, परंपराएं, अवधारणाएं, प्रतिक्रियाएं और चित्तवृत्तियां भी ढलती जाती हैं। स्वभाषा में कानून बनेगा तो न्याय के बारे में हमारा सोच स्वदेशी और मौलिक होगा।

यदि कानून अंग्रेजी में बनता है तो बहस और फैसले भी अंग्रेजी में ही होते हैं। इसका नतीजा तो यह है कि मुकदमे द्रौपदी के चीर की तरह लंबे होते चले जाते हैं। देश में लगभग तीन करोड़ मुकदमे अधर में लटके हुए हैं। कई-कई तो 30-30 बरसों से लटके हुए हैं। अन्य कारणों के अलावा इसका एक बड़ा कारण अंग्रेजी भी है। विदेशी भाषा को समझना, बोलना और लिखना अपनी भाषा के मुकाबले कठिन होता है। इसीलिए अंग्रेज के पूर्व गुलाम देशों के अलावा दुनिया के लगभग सभी देशों में न्याय स्वभाषा में दिया जाता है। जॉन स्टुअर्ट मिल ने क्या खूब कहा है, 'देर से दिया गया न्याय, वास्तव में अन्याय है।' इस देरी का कारण अंग्रेजी है। अंग्रेजी के कारण हमारी न्याय-व्यवस्था अन्यायकारी बन गई है।

यदि न्याय स्वभाषा में मिले तो उसका अध्ययन-अध्यापन भी स्वभाषाओं में होगा। वकील या जज बनना अधिक आसान होगा। अभी तो उनकी सारी ताकत अंग्रेजी के बाल की खाल उखाड़ने में ही नष्ट हो जाती है। देश में हजारों नए जजों की जरूरत है। इसकी पूर्ति में अंग्रेजी सबसे बड़ा रोड़ा है। यह रोड़ा डॉक्टरी, इंजीनियरी, वैज्ञानिकी आदि सभी मार्गों में अड़ा हुआ है। यदि भारत में कानून और चिकित्सा की पढ़ाई स्वभाषाओं में होती रहती तो भारत के वकील और डॉक्टर दुनिया में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होते और उनकी संख्या भी प्रचुर होती। अंग्रेजी की अनिवार्य पढ़ाई ने भारतीय न्याय को किताबी ज्ञान में कैद कर दिया है। न्याय तो मूलतः उचित और अनुचित के सहज-संज्ञान को कहते हैं। कानूनी ग्रंथ, पुराने फैसले, नजीर वगैरह न्याय करने में सहायक जरूर होते हैं लेकिन यह सहायता हमारे न्याय पर काफी भारी पड़ती है, क्योंकि वह अंग्रेजी में होती है। यह ऐसा ही है, जैसे किसी श्रेष्ठ गायक पर उसके तबले और हारमोनियमवाले भारी पड़ जाएं। यदि कानून का किताबी ज्ञान स्वभाषाओं में हो तो वह न्याय-प्रक्रिया की सहज-संगति करेगा। शिक्षा में यह मूलभूत क्रांतिकारी परिवर्तन करना हमारे वर्तमान राजनीतिज्ञों के बस की बात नहीं है। इसीलिए फिलहाल फैसलों के अनुवाद का ही स्वागत है।

ओलंपियन हरविंदर सिंह ने किया ओलंपिक के महानायक पुस्तक का लोकार्पण

❑ सन्नी कुमार

ओलंपिक की पूर्व संध्या पर ओलंपिक के महानायक पुस्तक का

लोकार्पण 1964 टोकियो ओलंपिक में स्वर्ण पदक विजेता भारतीय हाकी टीम के सेंटर हाफ खिलाड़ी सरदार हरविंदर सिंह ने नई दिल्ली के रेलवे कालोनी में अपने निवास स्थान पर किया। इस पुस्तक के लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय के एसोसियेट प्रोफेसर एवं लिमका बुक आफ रिकार्ड के सुरेश कुमार लौ तथा खालसा कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय की एसोसियेट प्रोफेसर और दूरदर्शन खेल कमेंटेटर स्मिता मिश्र हैं। ओलंपिक के सर्वश्रेष्ठ पदक विजेताओं को केंद्र में रखकर लिखी गयी इस पुस्तक में विश्व के 24 महानतम खिलाड़ियों की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया,साथ ही भारत की प्रतिभागिता को वर्णित करते हुए भारत के पदक विजेताओं की उपलब्धियों को भी रेखांकित किया गया है। अनेक खेल विशेषज्ञों की उपस्थिति में उनके घर एक खेल उत्सव सा मन गया।

इस अवसर पर टोकियो ओलंपिक 1964,मैक्सिको ओलंपिक 1968,1972 म्युनिख ओलंपिक में एक स्वर्ण ,दो कांस्य पदक विजेता हरविंदर सिंह देश के सर्वश्रेष्ठ सेंटर हाफ के रुप में विख्यात रहे। सरदार हरविंदर सिंह ने जहाँ ओलंपिक के रोचक मैचों के किस्से सुनाए वहीं बदलती हाकी पर भी अपने विचार रखे। उनकी खेल यात्रा का परिचय आकाशवाणी के चर्चित कमेंटेटर एवं व्यंग्यकार श्री कुलविंदर सिंह कंग ने किया। कंग जी ने भारतीय हाकी दल की पदक संभावनाओं का आकलन किया। डा सुरेश कुमार लौ तथा डॉ स्मिता मिश्र ने अपने-अपने लेखकीय वक्तव्य में पुस्तक की रचना प्रक्रिया से उपस्थित श्रोताओं को परिचित कराया ,साथ ही भारतीय खेलों पर गहरा विमर्श भी किया। इस अवसर पर अनेक खेल प्रशिक्षक, खिलाड़ी, खेल प्रेमी उपस्थित थे। इससे ओलंपिक की पूर्व संध्या एक यादगार खेल संध्या बन गयी

New Discovery

The Nellore civic body is going to be the first in the state and second in the country to have its own petrol bunk to address the fuel needs of its fleet of 96 vehicles. Surat in Gujarat is the first municipality in the country to have its own petrol bunk.

The outlet for the Nellore Municipal Corporation was set up by the Bharat Petroleum Corporation Limited and is ready for inauguration. Corporation authorities are waiting for the dates of Nellore rural and town legislators as well as newly elected Nellore MP Mekapati Rajamohan Reddy to attend the inaugural function.

Dr T.S.R. Anjaneyulu, commissioner of Nellore municipal corporation, said that they will save a minimum of Rs.2 lakh per month with this petrol outlet. The idea to have a fuel outlet for the civic body was conceived, following pilferage and private petrol bunks' refusal to wait for payment of dues, he added.

Incidentally, the civic body did not spend any money and the BPCL itself invested Rs.7 lakh for the facility. Corporation vehicles involved in the transportation of garbage among other activities, need 40,000 litres of diesel per month and the direct saving will be 72 paise (commission per litre) on every litre.

Additional savings for the corporation is that the movement of vehicles is being monitored through the vehicle tracking system.

All vehicles have been fitted with global positioning system (GPS) devices to improve overall efficiency, effectiveness, transparency and accountability in all their logistic operations.

Mr Anjaneyulu claimed that they are the first to introduce the transport monitoring system (TMS) with GPS technology.

"TMS gives the live location of the vehicle, and the system will give an alert if a vehicle stops for more than a given time or deviates from defined routes, besides generating start/stop reports and truck summary with kilometres travelled," Mr Anjaneyulu noted.

❑ Vikram kumar jain

फेसबुक दुनिया की सबसे बड़ी मंडी

❑ टी. के. मारवाह

यूँ तो ये पूरी दुनिया ही मंडियों से अटी पड़ी हे

सब कुछ बिकाऊ ,पर आज कल एक मंडी पुरी दुनिया मैं आज सबसे ज्यादा चल रही हे और बहुत जोरों और शोरों मैं है इस मंडी ने आज हमारा सामाजिक ढांचा ही बदल के रख दिया हे ,दिन बाद मैं शुरू होता हे फेसबुक मंडी अल सुबह से ही अपने योवन पर आ जाती हे ,आइये अब इस तारो ताजा मंडी की सैर करते हैं, यहाँ वो सब कुछ हे जो खुदा के पास भी नहीं बस जरुरत हे एक स्मार्ट फोन, लैपटाप, या फिर दफ्तर का डेस्क टाप जो भी हो बस इंटरनेट से लेस हो और आपकी लाइफ हो गयी झींगा लाला. आप कहीं भी हों घर या दफ्तर या कहीं और काम मैं मसरूफ हों या जाम मैं फंसे, आपका दोस्त फैस बुक आपकी हर तरह की सेवा को तत्पर हे इस पर दोस्ती करने के लिए आपको 12 साल से शुरू होकर 70 साल तक के युवा और युवतियां (यहाँ फुके हुए अधेड़ों का कोई अलग वर्ग नहीं हे) आप 70 बरस के होते हुए भी शाहरुख का फोटो अपने फोटो की जगह लगाकर अपनी बची खुची जिन्दगी तक बड़े आराम से अनुष्का, कट्ररीना खेल सकते हैं, और तो और खुद आपके परिवार के लोगों को भी नहीं पता लगेगा की आप उम्र के इस पड़ाव पर कोनसा आई पी एल खेल रहे हैं, यही इस फैस बुक की खासियत हे .की एक हाथ को दुसरे हाथ का पता नहीं चलता है, जब की खेल बिंदास और धडल्ले से बेखोफ चलता है, इस पर आपको दुनिया भर के बेहतरीन अविष्कारों, बाग बगीचों, हसीन माडलों तपती दोपहर मचलती शामे और लुढ़कती रातें सब मौजूद है, ढेरों कवितायें, ढेरों शेर और करोड़ों तुकबन्दियाँ एक क्लिक पर हाजिर हैं दिलेरी इतनी की गालिब का शेर भी हर किसी की अपनी फक्ट्री का उत्पाद हो गया है, और खुद गालिब भी अपने उस शेर को क्लेम नहीं कर सकता ? अभी हाल मैं एक बड़ा मजेदार किस्सा हुआ दफ्तर मैं अधेड़ उम्र का बॉस अपने लेपटोप पर एक कमसिन से इश्क इश्क खेल रहा था वही उसकी सेक्रेटरी बॉस के सामने ही अपनी टेबल पर रखे डेस्क टास्क पर उस बॉस के जवान लड़के से इश्क फरमा रही थीं. आधुनिकता का इजाफा अपना अपना रूम अपना अपना वाशरूम अपना अपना स्मार्ट फोन और अपने अपने साइज का इश्क सब फैस बुक पर चल रहा हे ,अगर आपका जवान लड़का या लड़की वाशरूम मैं समय ज्यादा लगा रहे हों तो फिक्र न करें वो अकेले नहीं हैं फैस बुक की छत्र छाया उनके साथ हे ,इस पर सिर्फ दिलवाले ही नहीं अब तो दिलजले भी आ गए हैं जो दिन भर भूखे भेड़िये की तरह फेसबुक पर नजर गडाए रहते हैं जहाँ अपने मतलब का कोई अच्छा सामान नजर आया की चाट चाट खेलने शुरू और "जी ,बेहतर हे ,शुक्रिया ,धन्यवाद का दौर शुरू ,सामनेवाला अगर आपको झेलने के मूड मैं हो तो गाड़ी चल सकेगी कुछ दूर तक ३और यदि नहीं तो धीरे से शुक्रिया बोल के आप तुरंत गायब /अद्रश्य हो सकते हैं वहां से अब तो पुलिस भी कंट्रोल रूम मैं फैस बुक से लेस हो गयी हे ? अच्छे से अच्छे अपराधी माल उड़ाने के बाद माल ढूँढ़ते हुए यहीं पाए जाते हैं और हमारी पुलिस मीना ध्रीना ध्शीना बन कर उन्हें बड़ी शान से पिंजरे तक ले आते हैं आप यहाँ अपने नेताओं को जी भर के कोस सकते हैं उसके लिए भी यहाँ कई पेज हैं जहाँ दिन भर आपको क्रांतिकारी उपलब्ध रहते हैं ३जरा सा एक शब्द आपके तरकश से निकला नहीं की वहां मोजूद शिकारी झुण्ड के झुण्ड बना कर आप पर टूट पड़ेंगे और हर तरह के शब्दों से आपकी मरम्मत कर आपको मानसिक रूप से लहुलोहान कर देंगे यहाँ हर धरम खास कर दुनिया का सबसे बड़े दो धरम जो हरवक्त ही रहते हैं गरम यानि हिन्दू मुस्लिम इस धरम के हिमायती चोबिसों घंटे शाब्दिक हथियारों से हर दम चाक चोबंद रहते हैं ,एक शब्द का किसी धरम के खिलाफ इस्तेमाल हुआ और बीसियों जवान गिद्ध की तरह टूट पड़ेंगे और तब तक दम नहीं लेंगे जब तक अपना सिस्टम पूरा आफ न कर दें आज कल एक वर्ग और बहुत जोरों से फैस बुक पर आ गया हे धन्देबाज जो "कोई मरे चाहे जिए खुसरा घोल बतासा पिए " उधर फैस बुक पर राजनितिक मारा मरी चल रही हे ,वहीँ धर्म युद्ध भी चल रहा हे उधर इन सबसे बेखबर दो दिल रूमानियत मैं खोये हुए हैं और ये धन्देबाज दिन भर शिवजी को शहद से निहलवा रहा हे साथ मैं अपना फोन नंबर लेके बैठा दुनिया के हर गम से निजात दिलाने का दावा कर रहा हे यानि जिस वक्त इसके जनक मार्क जुबेर ने इसकी पारी कल्पना की होगी उस वक्त खुद उन्होंने भी नहीं सोचा होगा की वो कोनसा भिन्डी का बीज बो रहे हैं ये तो दोस्तों कैसी लगी ये मंडी आपको।

"Nominations Open" News Papers Association of India Achievement Award-2012 and 20th Annual Conference

In the field of Journalism & Social Activities Nai Awards 2012, submissions open The News Papers Association of India invites journalists from developing India and the Pacific to submit published articles written, News, Videos, Photos, Social Activities, Agriculture or Rural Documenters' in January / 2012 to November / 2012 in connection with the 2012 annual Developing NAI Journalism Awards If you are interested in participating in the 2012 NAI Award program, please Send Your Port Folio. In C.D or You Can mail at: - naiindia@gmail.com Statement of Terms and Conditions

Articles , News , Videos , Photos , Social Activities , Agriculture or Rural Documenters must be published And Telecast works and may have appeared in a regional newspaper, magazine, news wire service or website between 1 January 2012 to 31October 2012. The judges shall not be bound to award a prize in any categories where they do not feel that the quality of entries merits it. Submission deadline for NAI Awards 2012 is 7TH November 2012 , 6 pm Indian time.

Publishing on 10th of every month
RNI No. 62500/95
REGD. No. DL (E)-01/5149/2012-2014
LICENCE TO POST WITHOUT
PRE-PAYMENT No. U(C)223/12-14

To,

If undelivered, Please return to:
न्यूज़ पेपर्स एसोसिएशन
ऑफ इण्डिया
POST BOX 9235, NEW DELHI-110 092

यदि आप लेख, रचना, समाचार, विचार प्रेषित करना चाहते हैं तो आप अपने अप्रकाशित लेख निम्न पते पर भेजें।

आपको *NAI* का यह अंक कैसा लगा, इस बारे में अपने सुझाव हमें निम्न पते पर भेजें।

एन. ए. आई.
A-115, Vakil Chambers, Top Floor,
Shakarpur, Delhi-110092, M.: 09971847045

Editorial Board

Founder	**Late Dr. M. R. Gaur**
Editor Publisher-Printer	**Vipin Gaur**
Counsultant Editor:	**Dr. Smita Mishra**
Managing Editor:	**Dilip Kumar**
Legal Advisors:	**Nikhat Anjum Malik**
Advocate Delhi Highcourt	**Rajesh Sharma**
	Adv. P. Yadav
Office Secretary	**Kavita Bamotra**

- Bureau Chief -

Guwahati:	**Runu Hazarika**
Mumbai:	**Mr. Dinesh K. Mishra**
Bangalore:	**Mr. M. K. Jain**
Jaipur :	**Mr. Banwar Singh Ranawat**
Chennai:	**Mr. P.C.R. Suresh**
M.P. & C.G.	**Mr. O. P. Jain**
Kerela	**Mr. Suvarna Kumar**
Goa	**Dr. Vivek Gaitonde**

गजल

मेरे दिल के गम उन्हें भी रूलाने लगे।
मेरी याद में अब वो भी कराहने लगे।।

डूबने लगी कश्ती जब दिल के अरमानों की।
इक नगमा सा गूंजा और हम याद आने लगे।।

इल्तेजा है उनकी मैं नगम-ए-गम न लिखूँ।
ये नगम-ए-गम उनके दिल को धड़काने लगे।।

हैरत हुई के उनका भी धडकता है दिल।
या हमारी याद उनके दिल को धडकाने लगे।।

थ जिनका दिल कभी स्याह मेरी मोहब्बत से।
उसी दिल में मेरी मोहब्बत के निशां नज़र आने लगे।।

❑ मोदस्सिर इलाहाबादी
email: modas_1980mohammed@yahoo.co.in

Printed, Published by Vipin Gaur on behalf of News papers Association of India, Printed at Mayank Offset Process 794/95 Guru Ramdas Nagar Ext. Laxmi Nagar Delhi-92 and Published from J-51, DLF Dilshad Delhi-95, Editor: Gayatri Gaur. All disputes settled in Delhi Court only.